

॥ श्री एतगावनी ॥

- भाला कभंडु वसे कर नीबालामां उभर निशूण वयवाला करमां बिराजे,
 ठिया छिउस्तकभले शुण शंभयक ओवा नमुं विधिउरीशस्वउपदत्त.
 १५ योगीश्वर दत्त दयाण। तुं ज ओक जगमां प्रतिपाण।
 अय्यनसूया कयी निमित्त, प्रगोट्यो जगकारण निश्चित.
 ब्रह्मांडरिउरनी अवतार, शरशागतनी तारशुभार;
 अंतर्धामी सत्त्वित् सुभ, ब्रह्मर सद्गुरु द्विगुज सुभुभ. ४
 जोगी अन्नपूजा कर भांख शांति कभंडव कर सोडाय;
 क्मांय यतुर्गुज षड्गुज सार, अनंतबहु तुं निर्धार.
 आब्यो शरशे बाण अजश, उठ दिगंबर बाल्या प्राश।
 सूषी अर्जुन उरो साह, दीज्यो पूर्व तुं साक्षात्. ८
 दीधी रिद्धि सिद्धि अपार, अंतं मुक्ति मलापह सार;
 दीधो आजे उभ विदंभ? तुज विश मुजने ना आबंभ।
 विष्णुशर्म द्विज तार्थो ओभ, ज्यो श्राद्धमां देवीप्रेभ,
 जंभदंत्यथी गार्या देव, दीधी भुरे तें त्यां ततभेव. १२
 विस्तारी भाया, दितिसुत ईद्रकरे उशायो वूर्त,
 ओवी वीवा कंठ कंठ शर्व दीधी वर्धवे को ते सर्वा!
 दोज्यो आयु सुतने काम, दीधो येने तें निष्काम;
 ओध्या यहुने परशुराम साधदिव प्रहल्लाह अकाम. १६
 ओवी तारी कृपा अगोधा! उभ सुशे ना भारो साह?
 दोड अंत ना ऐभ अनंत! भा कर अर्धवय शिशुनो अंत!
 जोई द्विजन्त्री उरो स्नेह, धयो पुत्र तुं निःसंदेह,
 स्मर्तुगामी कवितार कृपाण। तार्थो धोणी छेक गभार. २०
 पेटपीडधी तार्थो विप्र, ब्रह्मशशेठ गजार्थो क्षिप्र,
 करे उभ ना भारी च्छार? जो आशीराम ओक ज वार!
 शुभ काएने आश्यां पत्रा! धयो उभ उदासीन अत्र?
 जर्जर वंध्या उरो स्वप्न, कर्पा सकण तें सुतना कृत्स्न. २४

- करी कर ब्रह्मशना कीढ, कीधा पूरश येना कीड;
 वंध्या लंस कूजवी देव, उर्धु दारिद्रय तें ततभेव.
 जालर भाई दीज्यो ओभ, दीधो सुवर्षधट संप्रेभ;
 ब्रह्मशरन्त्रीनो भूत ररधार, दीधो सज्जवन तें निर्धार.
 पिशाच पीडा कीधी कर, विप्रपुत्र उठाज्यो शूर,
 उरी विप्रमद अंत्य उध, रस्यो लकत त्रिविक्रम तात!
 निभिमभाने तंतुड ओक, पडोयाज्यो श्रीशैवे देभ,
 ओकी साधे आठ स्वउप धरी देव बहुउप अउप. ३२
 संतोब्या निज लकत सुजत आपी परयाओ साक्षात्;
 यवनराजनी टाणी पीड, जतपातनी तने न बीड,
 रामकृष्णउपे तें ओभ, कीधी वीवाओ कंठ तेभ,
 तार्थो पथर गण्डिका व्याधा! पशु पंभी पश तुजने साध.
 ३६ अर्धभ ओधारश तारं नाभ, गातां सरे न शां शां काम?
 आधि व्याधि उपाधि सर्व टणे स्मरशमान्यथी सर्वा!
 मूठयोड ना लोओ जश पाये नर स्मरशे निर्वाध;
 उडश शाडश लंसासुर, भूत पिशाचो जंठ असुर.
 ४० नासे मूकी एडने वूर्त, दत्तधून सांभणतां भूर्त,
 करी धूप गाये जे ओभ दत्तभावनी आ संप्रेभ;
 सुधरे तेना अन्ने लोड, रडे न तेने क्मांये शोका!
 दासी सिद्धि तेनी धाय, दुःख दारिद्रय तेनां जय. ४४
 भावन गुरुवारे नित नेभ, करे पाठ भावन संप्रेभ;
 यथावकाशे नित्य नियम तेने कटी न इंउे यभ,
 अनेक उपे ओज अलंग, लजतां नउे न भाया-उंगी!
 सलरभ नासे नामी ओक, दत्त दिगंबर असंग छेक. ४८
 वंदु तुजने वारंवार, वेद श्वास तारा निर्धार,
 धाड वर्धवतां ज्यां शेष, कोश रांड हुं बहुकृतवेष;
 अनुभवतुंभीनो उद्गार, सूषी वसे ते भासे भार,
 तपसीतत्वमसी ये देव; ओलो जय जय श्री गुरुदेव. ५२
 ॥ श्री अर्धवृत्तचित्तन श्री गुरुदेव दत्त ॥